ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

गांधीवादी दर्शन एवं महिला सशक्तिकरणः एक विश्लेषण
Gandhian Philosophy and Women's Empowerment: An Analysis

Paper Submission: 15/10/2020, Date of Acceptance: 23/10/2020, Date of Publication: 24/10/2020

मेघा कुमारी
शोध छात्रा,
राजनीतिक विभाग
टी0 एम0 बी0 यू0,
भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश

''जिस प्रकार में किसी स्थूल पदार्थ को अपने सामेन देखता हूँ उसी प्रकार मुझे जगत् के मूल में राम राम के दर्शन होते है''। गांधी जी का यह प्रसिद्ध कथन इस बात की अभिव्यक्ति है कि उन्होंने किसी विशेष दर्शन को अपने विचारधारा का आधार नहीं बनाया वरन् इश्वर के प्रयोजन में अपनी आस्था व्यक्त की जो उनके विचारधारा का आधार बना जिसकी प्रासंगिकता गांधी दर्शन के रूप में है। जिसे विचार अर्थात् महात्मा गाँधी के राजनीति संबंधी विचारों के दिए गांधीवादी राजनीतिक दर्शन गांधीवादी राजनीतिक विचारधारा, गांधीवादी आदि शब्दों से व्याख्यातित की जाती रही है। गाँधीजी ने अपने विचारों को नित्यप्रति की समस्याओं को समझाने के लिए अवसरों के अनुक्रम अपने विविध विचार समय–समय पर व्यक्त किए। समाज में विद्यमान परिस्थितियों पर यथा जाति–पाँति, ऊँच–नीच धर्म संप्रदाय पर आधारित भेदभाव, वर्ग–संघर्ष, एवं महिलाओं की दुदर्शा पर जिसके कारण उनके विचारों में कहीं–कहीं विरोधाभास एवं असबद्धता भी मालूम पड़ती है। स्वंय गाँधीजी के शब्दों में '' लोग कहते हैं मेरे विचार बदल गए है और आज मैं वर्षों पूर्व कही बातों से भिन्न बातें कहता हूँ। सच्ची बातें यह है कि परिस्थितियाँ बदल गई है, मैं वहीं हूँ। मेरे शब्द व कार्य परिस्थितियों के अनुसार ही होते है। जिस वातावरण में मैं रह रहा हूँ उसका विकास होता रहा है और सत्याग्रही होने के कारण उसकी प्रतिक्रिया मेरे ऊपर भी होती रही है।''

अतः प्रस्तुत शांध पत्र का उद्देश्य गांधी दर्शन का समग्र अध्ययन करना है एवं महिलाओं की स्थितियों में सुधार के लिए गांधी जी के विचार अर्थात दर्शन की अपरिहार्यता को दर्शाना है । गांधी दर्शन की प्रासांगिकता जीवन के समग्र क्षेत्र राजनीतिक ,सामाजिक, अर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षत्रों में अपरिहार्य एवं अतुलनीय है।

In the same way that I see some gross matter as my body, I see Ram in the core of the world. " This famous statement of Gandhiji is an expression of the fact that he did not make any particular philosophy the basis of his ideology, but expressed his faith in the purpose of God which became the basis of his ideology which has relevance as Gandhi philosophy. Which has been interpreted by the words Gandhian political philosophy, Gandhian political ideology, Gandhian etc. given the idea ie Mahatma Gandhi's political ideas. Gandhiji, from time to time, expressed his varied views of the sequence of occasions to explain his ideas to the problems of continence. Due to the prevailing conditions in the society like caste-caste, high-caste religion based on discrimination, class-struggle, and the depiction of women, due to which there is a contradiction and dissonance in their views. In Gandhiji's words, "People say my thoughts have changed and today I say different things than what I said years ago." The truth is that circumstances have changed, I am there. My words and actions are according to the circumstances. The environment in which I am living has been developing and due to being a satyagrahi, it has also reacted to me. "

Therefore, the purpose of the holy paper presented is to conduct a thorough study of Gandhi philosophy and to show the indispensability of Gandhiji's idea i.e. philosophy for improving the conditions of women. Relevance of Gandhi philosophy is indispensable and incomparable in the political, social, economic, educational and cultural fields of life.

मुख्य शब्द : स्वराज, सर्वोदय, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा व्यवस्था।

Swaraj, Sarvodaya, women empowerment, education system.

प्रस्तावना

'दर्शन' शब्द का सामन्यतः सीमित अर्थ देखना होता है अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए। वही विचारधारा किसी समाज में प्रचलित विचारों का संकलन कहा जा सकता है जिसके आधार पर किसी विशेष दृष्टिकोण द्वारा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनितिक संगठन की परिभाषा की गई हो । जैसे कि गाँधीवादी विचारधारा स्वयं गांधीजी के शब्दों में ''गांधीवादी नाम की कोई वस्तु नहीं है और में अपने पीछे कोई संप्रदाय छोड़ना नहीं चाहता। मैं कभी इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने कोई नया सिद्धांत चलाया है। मैने मूल सत्यों को केवल अपने ढंग से अपने नित्यप्रति के जीवन और समस्याओं पर लागू करने की चेष्टा की है। आप इसे गांधीवादी नाम से पुकारें। इसमें कोई वाद नहीं है।''[1] इस प्रकार से दर्शन एवं विचारधारा द्वारा किसी विशेष दृष्टिकोण आधार पर वस्तु विशेष के संबंध में मनन एवं चिंतन की प्रक्रिया से निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाता है। चूंकि '' दर्शन द्वारा विषयों को हम संक्षेप में दो वर्गों में रख सकते है। लौकिक और अलौकिक अथवा मानवी (आपेक्ष) और आध्यात्मिक (निरपेक्ष) बिना दर्शनों के आध्यात्मिक पवित्रता एवं उन्नयन होना दुर्लभ है।''[2] यही कारण है कि गांधी दर्शन् को गांधीवादी विचारधारा का पर्याय माना जाता है, कारण यह है कि गांधी जी की संपूर्ण विचारों का केन्द्र बिंदु आध्यात्मिक ही रहा है। यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो गांधी जी की विचारधारा को प्रभावित करने वाले तत्त्वों में मुख्य रूप उल्लेखनीय प्राचीन धर्म ग्रंथ है। पंतजलि के 'योग सूत्र' से लेकर रामायण, महाभारत, कुरान, बाइबल, बौद्ध धार्मिक ग्रंथों आदि का प्रभाव गांधी जी के विभिन्न विचारों पर स्पष्टतः परिलक्षित होता है। बाइबल की एक अध्याय सर्मन ऑन दी माउन्ट ही गांधी जी द्वारा दी गई सत्याग्रह एवं अहिंसा के सिद्धांतों का आधार बना। अतः गांधीवादी विचारधारा को गांधीवादी दर्शन कहना उपयुक्त मालूम प्रतीत होता है।

स्वराज

''मैं ऐसे भारत के निर्माण के निर्माण का प्रयत्न करूंगा जिसमें निर्धन–से– निर्धन मनुष्य भी यह अनुभव करेगा कि यह मेरा अपना देश है, और इसके निर्माण में मेरा पूरा हाथ है। ''[3] गांधी जी के अनुसार 'स्वराज' को ही सच्चे लोकतंत्र का पर्चाय माना जा सकता है एंक ऐसी व्यवस्था जहा सभी लोग कंधे–से–कंधा मिलाकर राष्ट्र निमार्ण एवं राष्ट्र की प्रगति में अपना योगदात देते हों। परन्तु ऐसी व्यवस्था केवल तभी संभव हो सकती है जब सत्ता के दुरूपयोग होने पर राष्ट्र के लोग सत्तारूढ़ के विरोध करने की क्षमता रखते हो।

'स्वराज' का शाब्दिक अर्थ सामान्यतः '' स्वशासन या अपना राज्य होता है। गांधी जी ने सर्वप्रथम 1920 में स्वराज शब्द का प्रयोग भारत के लिए संसदीय शासन की मांग के लिए किया था। जिसका उद्देश्य ब्रिटेन के राजनैतिक, सामाजिक, अर्थिक, ब्यूरोकैटिक, कानूनी, सैनिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं का बहिष्कार करना था। गांधी जी के अनुसार स्वराज शब्द की अभिव्यक्ति निम्न प्रकार से होती है %&"Swaraj Means a state such that we can maintain our separate existence without our feeling existence without the presence of English".[4] इस प्रकार गांधी जी द्वारा स्वराज शब्द का प्रयोग स्वशासन, आत्मनिर्णय, स्वाधीनता के लिए किया गया। स्वराज शब्द का प्रयोग यथयि सर्वप्रथम स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा किया गया था। तत्प्श्चात् बाल गंगाधर तिलक एवं गांधी जी के द्वारा किया गया। गांधी जी द्वारा स्वराज शब्द की व्याख्या भी उनके द्वारा दिए गए राज्य के संबधं में उनके दर्शन राम राज्य की तरह ही था। जहाँ स्वराज शब्द की व्याख्या को उनहोंने न केवल राष्ट्र की स्वतंत्रता तक सीमित रखा बल्कि स्वराज की व्याख्या व्याक्तिगत स्तर पर की। जिसके द्वारा व्यक्ति का व्यक्तित्त्व श्रेष्ठ एवं महान बन सकता है, जिसके द्वारा समाज की उन्नति एवं कल्याण में व्यक्ति अपना योगदान निहित कर सकते है। महात्मा गांधी द्वारा दिए गए स्वराज की अवधारणा का वर्णन उनके द्वारा 1909 में लिखी गई पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में मिलता है। जो हिन्दुओं के मांसिक एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने में मील का पत्थर साबित हुआ। गांधी जी के अनुसार हिंसा समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का केवल एक उपचार नहीं हो सकता है। ऐसे परिस्थिति में गांधी जी द्वारा यह अनुभव किया जा रहा था कि देशवासियों की आत्मसुरक्षा के लिए एक सशक्त औजार की आवश्यकता है जिससे देश के लोगों को आात्मचेतना की अनुभूति हो, जिससे वह अपने विरूद्ध हो रहे अत्याचारों एवं समाज में व्याप्त बुराईयों के प्रति सरकार का विरोध करने में सक्षम हो सकें। फलस्वरूप गांधी जी द्वारा स्वराज शब्द का प्रयोग समग्र रूप में किया गया। तात्कालीन उग्रवादियों, उदारवादियों एवं राष्ट्रवादियों को संबंधित करते हुए, " What you call swaraj is nothing swaraj".[5] गांधी जी के अनुसार " Swaraj also referred to a state of affairs in which individuals were morally in Control of themselves they did what was right, resolved their differences and conflicts and dispensed with external coercion for Gandhi".[6]

चूंकि गांधी जी विचार और कर्म में कोई अंतर नही करते थे इसलिए उनहोंने 'स्वराज' की मूल भावना का प्रयोग लोगों को जागृत करने के लिए किया। जिसकी स्पष्टता उनके द्वारा 1942 में से उनसे पूछे गए प्रश्न के उत्तर से स्पष्ट होती है । 1942 में उनसे पूछा गया कि वे '' साम्राज्य की शक्ति का सामना कैसे कर सकेगें, तो उनका उत्तर था लाखों मूक जनता की शक्ति द्वारा''।[7] गांधी जी के अुनसार '' स्वराज का पौधा उस देश में पनपता है जिसकी जड़ें अपनी पंरपराओं से जुड़ी हों परन्तु वह इन परपराओं की त्रृटियों के प्रति भी सजग हो, और दूसरों से अच्छी बातें सीखने को तैयार हो। ''[8] गांधी जी की प्रस्तुत उक्ति से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी इस बात पर जोर देते थे कि स्वारज का अर्थ केवल राजनितिक स्वतंत्रता नहीं हो सकता है वरन् स्वराज का अर्थ नैतिक एवं सांस्कृतिक पराधीनता से मुक्त होना है,

जो केवल अपने राष्ट्र की पंरपराओं को सुढ़ढ़ करने एवं उसको मजबूत करने से ही संभव है। गांधी जी द्वारा स्वराज के चार स्तम्भों की चर्चा की गई है :– '' अस्पृश्यता का निवारण, खादी का निमार्ण, हिन्दू मुस्लिम एकता , तथा अहिंसा का प्रतिपादन''।[9] अतः स्वराज की प्राप्ति के लिए गांधी जी ने निम्न दर्शन प्रस्तुत किए। जिसका वर्णन इस प्रकार है :–

1. सत्य और अहिंसा का सिद्धांत,
2. सत्याग्रह का सिद्धांत,
3. सविनय अवज्ञा का सिद्धांत,
4. शरीर श्रम का सिद्धांत,
5. अपरिग्रह का सिद्धांत,
6. अस्तेय का सिद्धांत,
7. न्यासिता का सिद्धांत,
8. सर्वोदय का सिद्धांत।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गांधी जी की स्वराज की अवधारणा अपने आप में समग्र है। गांधी जी के समस्त दर्शन आध्यात्मिक बिंदु से शुरू होकर वास्तविकता की पटल पर स्थित हुए है। अर्थात् दक्षिण अफ्रीका में भारतीय उपनिवेशों की दुदर्शा के प्रति वेदना की अनुभूति ने ही गांधी जी को न्याय की भावना से प्रेरित होकर भारत में उत्पन्न अन्याय, भेदभाव, हीनता के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध किया। फलस्वरूप गांधी जी द्वारा ' स्वराज' की अवधारण को समग्र स्वरूप दिया गया। जिसकी अतिव्यक्ति व्यक्ति विशेष की आंतरिक स्वतंत्रता से देश की स्वतंत्रता के रूप में होती है। उनके शब्दों मैं " self at every stage is to be understood in terms of its origins destiny and the relationship with other things, One who attains such knowledge attains the mental status of equanimity, sef control/restraint and this salf rule."[10] इस प्रकार गांधी जी आंतरिक स्वतंत्रता के साथ ब्राह्य स्वतंत्रता अर्थात् स्वराज की बात करते थे, जो उनके दर्शन में स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

सर्वोदय

'सर्वे भवन्तु सुखनिः सर्वे सन्तु निरामयः, सर्वे भद्रनि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाग भवेत' संस्कृत का यह मंत्र सर्वोदय के विचार की मूल भावना को स्पष्ट करता है। सामान्य शब्दों में सर्वोदय का शब्दिक अर्थ, 'सब का उदय सब का विकास एवं सब प्रकार से उदय से है।' सर्वोदय के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने भिन्न –भिन्न विचार रखे। राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि 1916 से चले गांधी का सर्वोदय 1948 (गांधी के हत्या) के बाद से तीन प्रकार हो चुका है ये है– सरकारी गांधीवादी, मठी गांधीवादी, और कुजात गांधीवादी ''।[11] वहीं विनोबा भावे के अनुसार सर्वोदय सभी के उत्थान एवं सर्वशक्ति के साथ सर्व हित में चलने से है। एक ऐसा समाज जहाँ सभी के साथ समान व्यावहार हो अर्थात् एंसी वर्गविहीन और शोषण मुक्त समाज जहाँ वर्ग , धर्म, जाति, भाषा आदि के आधार पर किसी प्रकार का कोई बहिष्कार नहीं हो। इस प्रकार सर्वोदय शब्द से केवल मानव जाति के कल्याण करने का उद्देश्य स्पष्ट होता है। अर्थात् सर्वोदय कहता है '' तुम दूसरों को जिलाने के लिए जीओं।''[12] जहां तक गांधी जी के दर्शन के संदर्भ में सर्वोदय के सिद्धांत की बात की जाए तो गांधी जी द्वारा व्याख्यातित सर्वोदय दर्शन का आधार रस्किन की पुस्तक 'अनटु दिस लास्ट पुस्तक' है। जिसकी स्पष्टता गांधी जी द्वारा अपनी आत्मकथा में की गई हैं गांधी जी के शब्दों में ''जिस पुस्तक ने मेरे जीवन में क्रांतिकारी प्रभाव परिवर्तन कर दिया है। वह रस्किन की अनटु दिस लास्ट है। मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मेरे अन्तरतर में बसी हुई थी उसका स्पष्ट प्रतिबिंब मैंने इस ग्रन्थ में देखा । इस कारण उसने मुझपर अपना सम्राज्य जमा किया एनों अपने विचारों के अनुसार मुझसे आचरण करवाया। ''[13] गांधी जी के अनुसार रस्किन के किताब के द्वारा उन्होंने सर्वोदय के सिद्धांतों का अर्थ निम्न प्रकार से समझा :–

1. ''सबके भले में अपना भला है।
2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक– सी होनी चाहिए क्योंकि आजीविका का हक दोनों का एक सा है।
3. मजदूर का और किसान का अर्थात् परिश्रम का जीवन ही सच्चा जीवन होता है। ''[14]

गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय दर्शन रोसी पद्धति अर्थात् विचारधारा का समना करती है जो ' सत्य एवं अहिंसा पर आधारित हो जिसका उद्देश्य समाज में उत्पन्न द्वेष, वैर, भाव का उन्मूलन करना है। यही कारण है कि गांधी जी के सर्वोदय वादी दर्शन को गांधीवादी समाजवादी आदर्श के रूप में भी अभिव्यक्त किया जाता है। परन्तु इस आर्दश को प्राप्त कैसे किया जा सकता है यह एक विचाणीय प्रश्न था। जिसपर अन्य समाजवादी विचारधाराओं ने भी अपने–अपने तरीके से विचार रखे हैं। समाजवादी व्यवस्था की प्राप्ति के लिए साम्यवाद जिस प्रकार वर्गहीन समाज की कल्पना करते है एवं समाज के संपन्न वर्ग अर्थात् पूंजीपति वर्ग को समाप्त करने की बात करते है। जिसके लिए हिंसा के प्रयोग को भी सामाजिक परिवर्तन के लिए सही मानते हैं। परन्तु सर्वोदयी विचारधारा अपने आप में समग्र है जिसका उद्देश्य किसी एक वर्ग का उदय नहीं वरन् सब का उदय करना है। जिसे विनोबा भावे द्वारा दिए गए वक्तव्य से स्पष्ट समझा जा सकता है। उनके शब्दों में :– '' कुछ लोगों का अथवा बहुत लोगों का या अधिकांश लोगों का उदय नहीं चाहता । हम अधिकतम सं0 के अधिकतम हित से संतुष्ट नहीं है हम ऊंचे –नीचे, सबल– निर्बल, विद्वान व मूर्ख सभी के हित से ही संतुष्ट हो सकते है। हम केवल तभी संतुष्ट हो सकते है। सर्वोदय शब्द से इस उच्च तथा सर्वव्यापी भावना का बोध होता है।''[15] अर्थात् जो लोग संपन्न है उनका नैतिक उत्थान करना आवश्यक है एवं जो लोग गरीब –शेषित है तो उनके लिए जीवन की आधारभूत आवश्यकता रोटी, कपड़ा एवं मकान की पूर्ति ही नैतिकता आध्यात्मिक आदि सब कुछ है। इस तरह यह विचारधारा सभी विचारधाराओं से भिन्न प्रतीत होती है। अन्य सभी विचारधारा सर्वोदय की प्राप्ति के लिए बाहरी दबाव को अपरिहार्य मानती है जबकि गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय दर्शन सर्वोदय की प्राप्ति द्वारा व्यक्ति की अतः प्रेरण को बढ़ाती है। एक नैतिक दार्शनिक होने के कारण उनके विचारों का स्रोंत सदैव ईष्वरीय चेतना से अभिभूत होता है। गांधी जी द्वारा हमेशा साधनों की पवित्रता पर

बल दिया जाता रहा है। उनके अनुसार उत्तम साध्य की प्रारित उत्तम साधनों द्वारा ही संभव है। उनके शब्दों में '' जैसे साधन होंगे वैसे ही साध्य होगा।''[16] अतः उन्होंने सर्वोदयवादी समाजवादी की स्थापना के लिए उन्होंने सत्य एवं अहिंसा के साधनों के प्रयोग को आधार बनाया अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग' में उन्होंने लिखा है '' मेरे निरंतर अनुभव ने मुझे विश्वास दिया है कि सत्य से अलग कोई ईश्वर नहीं है। ....और सत्य की सिद्धि का एक मात्र उपाय अहिंसा हैं। अहिंसा की अखंड साधना से ही सत्य का पूर्ण साक्षात्कार होता है। ''[17] गांधी जी के अनुसार ''किसी को कष्ट पहुंचाने का विचार या किसी का बुरा चाहना भी हिंसा है''।[18] जो सर्वोदय की प्राप्ति में भी बहुत बड़ी बाधा है। समाज के सारे आदर्श सद्गुण के सारे नियम गांधी जी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा के सिद्धांत में आ जाते है। यही कारण है गांधी जी ने सत्य एवं अहिंसा को सर्वोदय के आदर्श की प्राप्ति के लिए अपरिहार्य मानते है। क्योंकि केवल सत्य और अहिंसा के नियम को व्यवहार में धारण करने के पश्चात् ही लोग एक दूसरे के कल्याण के लिए कार्य करने में सक्षम हो सकते है जिससें सर्वोदय की मूल भावना को प्राप्त किया जा सकता है। सत्य व अहिंसा के सिद्धांतों के अतिरिक्त गांधी जी द्वारा सर्वोदय दर्शन की आधारशिला रखने के लिए निम्न तत्वों पर बल दिया गया। जो इस प्रकार है :–

विकेन्द्रीकरण

विकेन्दीकरण शासन– व्यवस्था, कार्यो , शक्तियों एवं सत्ता को केंद्रीय स्थान से हटाकर पुनः विभाजित करने की प्रक्रिया से है। गांधी जी के अनुसार '' लोकतंत्र का अर्थ इस तंत्र में नीचे से नीचे तथा ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।''[19] अतः विकेन्द्रीकरण की अवधारणा सर्वोदय दशर्न के सुदृढ़ करने के लिए अनिवार्य है।

ग्राम स्वावलम्बन

महात्मा गांधी के संपूर्ण दर्शन का केंद्र गाँव रहा है। ऐसी परिस्थिति में सर्वोदयी विचारधारा ऐसे आत्मनिर्भर गांव की कल्पना करता है जो शोषण मुक्त हो। फलस्वरूप गांधी जी द्वारा लघु–कुटीर उद्योग पर बल दिया जाता रहा था।

आर्थिक समानता

गांधी जी द्वारा सर्वोदयी समाज की स्थापना के लिए आर्थिक समानता पर बल दिया गया। उन्होंने न्यासिता का सिद्धांत प्रतिपादित किया। जिसमें पूंजीपतियों का हृदय परिवर्तन कराना शमिल है। ताकि पूंजीपति अपनी संपत्ति को अपनी संपत्ति न समझकर संपूर्ण समाज का समझकर उसका उपयोग समाज की उन्नति एवं कल्याण के लिए करें।

इसके अतिरिक्त सर्वोदय दर्शन के प्रमुख तत्व निम्न है :–

1. पारिश्रमिक की समानता,
2. प्रतियोगिता का अभाव,,
3. साधन शुद्धि,
4. इद्रिय परिग्रह,
5. भूदन आंदोलन,
6. राज्य का क्षय,
7. व्यक्ति एवं सृष्टि संबंध,
8. अध्यात्म एवं योग की साधना।

अतः स्पष्ट है कि गांधी जी का सर्वोदयी दर्शन अत्यन्त समग्र एवं विश्वव्यापी है।

महिला सशक्तिकरण

" To Call women the weaker sex is a like ; it is a man justice of women" .[20] महिला सशक्तिकरण के संबंध में गांधी जी की भूमिका का विश्लेषण करने से पूर्व यह स्पष्ट करना होगा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व स्त्रियों की दशा क्या रही थी ? भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा ,बाल विवाह, सत्ती प्रथा जैसी कुप्रवृतियां विद्यमान थी। राजनिति में स्त्रियों की भागीदारी शून्य थी। ऐसे में महात्मा गांधी की भूमिका स्त्रियों के सशक्तिकरण में अन्य समाजिक एवं राजनीतिक सुधारकों की तरह अतुलनीय रहा। जो वर्तमान परिदृश्य में भी प्रासंगिक है। यद्यपि स्वतंत्रता पूर्व बाल–विवाह, सतीप्रथा, जैसी प्रवृतियां चरम पर थीं, तो वर्तमान परिदृश्य में तेजाब से आक्रमण, घरेलू हिंसा, ऑनर किलिंग (सम्मान के लिए हत्या) देह व्यापार, डायन अभियोग आदि प्रवृतियां चरम पर है। ऐसे में महात्मा गांधी के विचार सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनीतिक समग्र क्षेत्रों में स्त्रियों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के संबंध महत्त्वपूर्ण हो जाते है। यहां तक कि गांधी जी ने इस बात को स्वीकार किया कि अहिंसा एवं निष्क्रिय प्रतिरोध की अवधारणा उन्होंने अपनी पत्नी एवं माँ से ग्रहण किया। ऐसे में वह इन विचारों को सार्वजनिक कर यह दर्शाने का प्रयास करते रहे कि स्त्री और पुरूष शरीरिक रचना को छोड़कर हर अवसर पर समान है। उनके साथ किसी भी तरह का भेद भाव नहीं किया जाना चाहिए। उनके शब्दों में ''The wife is not the husband's bondslave, but his companion and his help mate, and an equal partner in all his joys and sorrows – as – free as the husband to choose her own path."[21] गांधी जी द्वारा इतिहास में सावित्री, सीता जैसी स्त्रियों का आह्ववान कर स्त्रियों की मांसिक क्षमता का परिचय कराया जाता रहा है। परन्तु साथ ही वह शास्त्र की पांरपरिक प्रथाओं के उन्मूलन को प्रयासरत रहे। जिसके लिए गाँधी जी ने स्त्रियों को शिक्षित, स्वावलंबी, राजनीति में स्त्रियों की भागीदारी की वकालत की। उनका मानना था कि " womanhood is not restricted to the kitchen . He writes if you women would only realize your dignity and privilege and make full use of it for making I you will make it much better than it is. But man has delignted in enslaving and you have proved willing slaves till the slaves and the slave holder have become one in the crime of degrading humanity. I was once a slave holder my self but kasturba proved an unwilling slave and thus opened my eyes to my mission."[22] इस प्रकार गांधी जी ने स्त्रियों की आंतरिक चेतना को पुर्नजीवित किया। तत्पश्चात् उनके नेतृत्व में स्त्रियां भारतीय स्वाधीनता संग्राम के संघर्ष में भाग ले पायी। इसके साथ ही गांधी जी द्वारा हस्तकला, खादी, कुटीर – उद्योग धंधों का समर्थन कर स्त्रियों को आर्थिक स्तर से सशक्त करने का प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय माना जा सकता है। आर्थिक रूप से सशक्त महिला एवं शिक्षित महिला ही शासन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम हो सकती है।

इस प्रकार हिन्दु मुस्लिम एकता, छुआछूत, विरोधी संघर्ष के अतिरिक्ति स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को सुधारना गांधी जी का मुख्य लक्ष्य रहा था।

शिक्षा– व्यवस्था

गांधी जी के शिक्षा संबंधी दर्शन की अभिव्यक्ति व्यक्ति के आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं शारीरिक पहलुओं से स्पष्ट होती है। जिसका आधार 3H है अर्थात् Head. Hand. Heart हैं। जिसका उद्देश्य तात्कालिक एवं दूरगामी होना चाहिए। तात्कालिक उद्देश्य से तात्पर्य रोजगार, स्वतंत्रता, एवं सांस्कृतिक उत्थान से संबंधित माना जा सकता है। जबकि दूरगामी लक्ष्य का आधार जीवन के नैतिक उत्थान से संबंधित रहा। जिसके द्वारा आत्मचेतना, सत्य का ज्ञान हासिल करना होगा। गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचार में नैतिकता की अभिव्यक्ति होती है। अर्थात् शिक्षा एवं दर्शन साथ–साथ चलता है । भारत की शिक्षा–व्यवस्था में गांधी जी के शिक्षा संबंधी दर्शन को विभिन्न नामों जैसे वर्धा शिक्षा योजना, नयी तालीम, बुनियादी शिक्षा, बेसिक शिक्षा के नाम से जाना जाता है। जिसके अनुसार स्कूली बच्चे कक्षा– एक– से ही तकली से सूत कातते थे, रूई से पौनी बनाते थे, और सूत की गुड़िया बनाकर खादी भंडारो को देते थे। शिक्षा के संबंध में उनका विचार व्यावसायिक था एवं शिक्षा को रोजगार परक एवं अल्पव्ययी बनाने को था।

इसके साथ ही गांधी जी वर्त्तमान शिक्षा–व्यवस्था के दोषों को बताते हुए शिक्षा प्रणाली को " विगलित"[23] कहा, अर्थात् देश में स्कूल शिक्षा का अभाव आदि के कारण स्त्रियों, गाँव, कस्बों के बच्चों को शिक्षा का अभाव का कारण बताया है। अतः गांधी जी द्वारा वर्णित शिक्षा दर्शन के उद्देश्य इस प्रकार है :–

1. जीवाकापोर्जन का उद्देश्य,
2. सांस्कृतिक उद्देश्य,
3. पूर्ण विकास का उद्देश्य,
4. नैतिक अथवा चारित्रिक विकास,
5. मुक्ति का उद्देश्य ।"[24]

जिसकी प्राप्ति बुनियादी शिक्षा के माध्यम से संभव हो सकती है। जिसकी विशेषताएं निम्न प्रकार है :–

1. 7 से 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देना।
2. बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि 7 वर्ष है।
3. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए, हिन्दी भाषा की अनिवार्यता होनी चाहिए।
4. शिल्पकारी की शिक्षा देनी चाहिए।
5. शारीरिक श्रम के शिक्षा द्वारा जीविकापोर्जन के उपयुक्त बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।
6. बालक एवं बालिकाओं का समान पाठ्यक्रम होना चाहिए।
7. बालिकाएं छठीं व सातवीं कक्षाओं में शिल्प के स्थान पर गृह विज्ञान ले सकती है।
8. पाठ्यक्रम का स्तर वर्त्तमान मैट्रिक के समकक्ष है।
9. पाठ्यक्रम में अंग्रेजी और धर्म की शिक्षा नहीं देनी चाहिए।

शोध पत्र का उद्देश्य

गांधी दर्शन का समग्र अध्ययन करना है एवं महिलाओं की स्थितियों में सुधार के लिए गांधी जी के विचार अर्थात दर्शन की अपरिहार्यता को दर्शाना है । गांधी दर्शन की प्रासांगिकता जीवन के समग्र क्षेत्र राजनीतिक ,सामाजिक, अर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षत्रों में अपरिहार्य एवं अतुलनीय है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत पत्र द्वारा गांधी दर्शन से संबंधित स्वराज, सर्वोदय जैसी अवधारणा के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि एक नैतिक दार्शनिक होने के नाते गांधी जी का संपूर्ण दर्शन मानवता के नैतिक उत्थान पर केंद्रित है। जिसके द्वारा राष्ट्र सेवा करने का प्रयास किया जाता रहा है। वहीं महिला की स्थितियों में सुधार के लिए गांधी जी द्वारा स्त्रियों को शिक्षित एवं स्ववलंबी करने की अनिवार्यता पर बल दिया गया, जिससे कि समाज में स्त्रियों की स्थिति सशक्त हो सकें। उनका मानना था कि केवल 'शिक्षा' के द्वारा ही वर्त्तमान स्थिति में सुधार संभव है। जो कि वर्त्तमान में पूर्णतः प्रांसगिक प्रतीत होता है। जैसे कि केरल राज्य के संदर्भ में हम देख सकते है वहां की साक्षरता दर 100% लगभग हो गई है एवं वहा लिंग–भेद का स्तर शून्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *नारायण इकबाल, आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ, जयपुर,, श्रीमति नारायण 2001, पृ0– 404।*
2. Hi Wikipedia. Org/wiki/ *गांधी– दर्शन।*
3. *गावा.ओ. पी, राजनीति–विचारक– विश्वकोष – नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2005, P-101.*
4. *Speeches and writings of M.K Gandhi, P-549, M.K Gandhi. Org/ebks/speeches&writing sofong pdf.*
5. *The philosophy of Hind Swaraj, Chapter- V P-201,119 A Shodhganga, intlibnet, ac in ….*
6. *Gandhi's Concept of swaraj, chapter- IV, P- 122, Shodhganga, inflibnet. Ac.in*
7. *चंद्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ग्लोरियस प्रिंटर्स दिल्ली, 2019 P- 279*
8. *गावा, ओ.पी पूर्व संदर्भित, P- 101*
9. *तिवारी रीता,'महात्मा गांधी की 'स्वराज'की अवधारणा', पीअर री0यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल अक्टूबर 2015, Shabd- brohom.com*
10. *Gandhi's Concept of swaraj, Chapter- IV , P-125 Shodhamga, inflibet. Ac.in.*
11. *चंतुर्वेदी मनोज, महात्मागांधी का सर्वोदय दर्शन, आन लाइन न्यूज पार्टल प्रवक्ता डॉट कॉम।*
12. Hi Wikipedia.org/ *सर्वोदय …..*
13. *देसाई महादेवए हरिभाऊ उपाध्याय, सक्षिप्त आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन , नई दिल्ली , 1955, पृष्ठ –83*
14. *उपर्युक्त पृष्ठ,*
15. *नारयण इकबाल, पूर्व संदर्भित, पेज–434।*
16. *गावा, ओ.पी. , पूर्व संदर्भित, पेज' 320।*
17. *उपर्युक्त पृष्ठ,*
18. *उपर्युक्त पृष्ठ,*

19. शर्मा कुमकुम, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का स्वरूप, रिर्सच रिर्व्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लनरी पृष्ठ–4 rrjournals.com .
20. Barman pinkumani, Gandhi and his vision for women empower ment, IJCAES special issue In rocome 11,2013, liteseerx. Ist. PSU edu.
21. The selected works of mahtma Gandhi vol-v the voice of truth part II- section: social ideal of marriage, MK Gandhi. Org.
22. Baraman Pinumani पूवसंदर्भित P-2.
23. ibid.
24. श्रीवास्तव सुनीता स्रोतः गांधी वर्ष अंक 2 वर्ष7 5 अंक स्त्री– शिक्षा आर गांधी विचार hindi p,k.gandhi.org.
25. Hi Wikipedia.org/wiki/ महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन